Dr.Raman Kumar Thakur

Assistant professor (Guest)Department of Economics, D.B.College, Jaynagar, Madhubani.

Class B.A.part-2(H.&Subsidiary)Date:-11-11-2020.Lecture n.-15.

Topic :- भारत में राष्ट्रीय आय प्राक्कलन की सीमाएं(Limitations of National Income Estimation in India):- राष्ट्रीय आय प्राक्कलन की सीमाएं के तहत आर्थिक क्रिया तथा देश की अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण क्षेत्रों की क्रिया का शाब्दिक वर्णन करने की बजाय परिमाणात्मक मापदंड निर्मित करता है। इस प्रकार राष्ट्रीय आय का प्राक्कलन करते समय लाखो आर्थिक मात्राओं का योग करना पड़ता है। संयोगवश भौतिक उत्पादन प्रणाली के साहित्य में जिसका प्रयोग भूतपूर्व केंद्रीय आयोजित अर्थव्यवस्थाओं में किया जाता था सेवाओं को दो भागों में विभक्त किया गया भौतिक और अभौतिक। उक्त सैद्धांतिक समस्याओं के अतिरिक्त राष्ट्रीय आय के प्राक्कलन की अनेक सीमाएं हैं जिनकी भारत के लिए विशेष रूप में सार्थकता है जिस प्रकार से देखा जा सकता है:-1).अमुद्रीकृत क्षेत्र का

उत्पाद:- साधारणतया राष्ट्रीय उत्पाद मारते समय यह मान लिया जाता है कि उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का मुद्रा से विनिमय होता है भारत जैसे अल्पविकसित देश में जहां निर्वाह खेती की जाती है, उपज का काफी भाग विक्रय के लिए बाजार में नहीं आ पाता. इस भाग को या तो उत्पादक उपभोग के लिए रख लेते हैं या अन्य वस्तुओं और सेवाओं के विनिमय में उसे दूसरे उत्पादको को दे देते हैं।

2). आर्थिक कार्य पद्धति में विभिनता का अभाव:- भारत में उद्योगों के दृष्टिकोण से राष्ट्रीय आय के आँकड़े संकलित करने की रीति प्रचलित है। उदाहरण स्वरूप हम यह कह सकते हैं की एक कृषि -श्रमिक वर्ष का कुछ समय खेती में, कुछ उद्योग में, और कुछ तांगा चलाने में लगा सकता है ऐसी स्थिति में उसकी आय को विभिन्न व्यवसायों में बांटना कठिन होता है।

3). रिपोर्ट न की जाने वाली गैर- कानूनी आय:- भारत में काले धन के बारे में किए गए अध्ययनों से पता चला है कि अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण भाग छिपी

हुई या काली अर्थव्यवस्था के रूप में कार्य करता है और इसमें उत्पन्न होने वाली आय रिपोर्ट नहीं की जाती है।

4). आय वितरण संबंधी आंकड़ों का अभाव:- राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी में परिवारों या व्यक्तियों की आईडी तुरंत संबंधी आंकड़े एकत्र नहीं किए जाते इस उद्देश्य से परिवारिक आय या अन्य संबंधित चलो के बारे में पूछताछ करने की अपेक्षा राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संस्था ने उपभोक्ता व्यय के आंकड़ों का प्रयोग किया है।